

जग पूज्य श्री राम मैया वेठी देव ध्याए ।

श्री सीयराम कुशल कारण रंगनाथु मनाए ॥

नील जलध गात रघुनन्दन माता को वन्दन करने

निजरूप सुधा सों जननी का जिया भरने

बड़े चाव ओ अनुराग सो ढिग मातु के आए ॥

कौशल्या पद कमल है कंचन प्रभा मनोहर

नील मणि ज्यों सिर झुकाकर कियो नमन श्री रघुवर

महिरबान माता हर्षी लालु गोद उठाए ॥

अहिलाद सिंधु मगनु हो प्यारे पुत्र पुत्र कहती

प्रेम आसुएं बहाकर भुजाओं में गाढ़ कहती

लाख लाख आशीश देती हाथ पीठ पै फिराए ॥

रसाल से लाल गाल पर बार बार चुम्बन करती

अतृप्त उर अन्तर में पग प्रेम हिये धरती

आउ राम राम कहकर सुख सिंधु में समाए ॥

जिस रस की बूंद कारण शिव सनक उदासी

तेंहि सिंधु मगन मैया पुनि प्रेम प्यासी

अदभुत रंगति यह प्रेम की मिल प्यास बढ़ावे ॥

तपस्या जी मूरति जननी सदा हृदय उजारी

प्रेम भार झुके नैननि राम रूपु निहारी

भई पूर्ण काम राणी सुत लाढ़ लड़ाए ॥

फूल नालि सम भुज भुजा में सिंह कंध कुंवर को
गहि प्रेम आलिंगन करे अति हर्षि उर सों
अनुरुक्त हुई छबि राम पै सभु भान भुलाए ॥

नैन नीर छातीअ खीर बहे प्रेम की धारा
सवें बिन्दु अंगनि झलकें भीजे राम कुमारा
खड़ी रोम सकल तन की शिथिल अंग सुहाए ॥

लखि सुवन सुख भवन को हुआ मोद जो मन में
सो नारद शारद शेष कवि के अचे न कथन में
गद् गद् हुई जन्म रंक ज्यों पद धनद को पाए ॥

शैशव किशोर ऊपरि आए श्री राम यौवन में
बढ़ी सुन्दर कांति मुख कर भरी जोति नैननि में
हुई नीह में निमगनु सुतु सीने सों लगाए ॥

किया लाल का आलिंगन सताईस वर्ष से
बुझी प्यास न तिल भर भी पुत्र अंग परस से
वह प्रेम रूप भगुवंत नए रंग दिखाए ॥

मिले आज ही हैं मुझसे नितु मां ऐसा जाने
मनु प्राण जीवनु जांको राम प्रेम समाने
मोरी मैया पूछे गद् गद् मग मिथिला कथाएं ॥

गहिबर बनो में रिषि संग जब गए थे दोनों भाई
तब ताड़िका हत्यारी एक बाण से गिराई
रिषि यज्ञ रक्षा हेतु सभ निशिचर नसाए ॥

जब शुक को तुम अंगुली से खीरु खवाते
वह चौंच जो उठाए तुम डरके भाग जाते
अब रण में राक्षसों से नहीं तनिक डराए ॥

फूल गेंद जब सखा ले सन्मुख तेरे उठाते
बसि बसि पुकारि कांपते नैन हाथ सों छुपाते
सुबाहु मारीच कैसे बाण अग्नि जलाए ॥

सरियू इश्नान को भी रथ पालकी पै जाते
चोगान खेल में भी संगि सेना ले जाते
कैसे कठोर बन भूमि पर बन पनही सिधाए ॥
पल भर भी पान मिलने में जो देरि होती लालन
बार बार झमाई लेते सूखि जाते अधर तेहि छिन
बारह माह भोजन बिनु कैसे बन फलनि को खाए ॥

सरयू में जब सखा से तुम तैरना सीखते
जब भय से विकल दृष्टि से चहूं ओर देखते
कैसे कमला भागीरथी तुम पार हो पाए ॥

कभी ततैया डण्क मारे पीठ कोमल भुजा तेरी
उनको न दूरि करते धारि करुणा घनेरी
कैसे कहि लक्ष्मण सों सखा से बांह छुड़ाए ॥

निज सत्य सखा नेह में मति मग्न तुम्हारी
इनको छोड़ि दिव्य सुन्दरियों पर दृष्टि ना डारी
तेरे एक नेह वृत पर माता बलि बलि जाए ॥

भूल से भी तेरा चंद्र वदन जिस ने भी निहारा
वह सकल सुक्रत राशि है एक नाम उचारा
यह जानि भी तेरे सामने मुनि यज्ञ रचाए ॥

गुर ईश कृपा दृष्टि सों हुई दूरि बलाएं
करि प्रसन्न गाधि सुवन को पाई सकल विधाएं
तेरी कीरति गरीबि श्रीखण्डि साकेत सहिचरी गाए ॥